"भै"

• भै विच पवण वहै सदवाउ । भै विच चलहि लख दरीआउ । भै विच अगनि कढै वेगार । भै विच धरती दबी भारि । भै विच इंद फिरै सिर भारि । भै विचि राजा धरम दुआर ।

अर्थः- हवा सदा ही ईश्वर के डर में चल रही है । लाखों नदियां भी भय में बह रही हैं । आग जो सेवा कर रही है, ये भी रब के भय में ही है, सारी धरती ईश्वर के डर के कारण ही भार तले दबी हुई है । रब के भय में इन्द्र राजा सिर के बल घूम रहा है भाव, बादल उसकी ही रजा में उड़ रहे हैं । धर्मराज का दरबार भी रब के डर में है ।

भै विच सूरज भै विच चंद । कोह करोड़ी चलत न अंत । भै विच सिध बुध सुरनाथ । भै विच आडाणे आकास । भै विच जोध महाबल सूर । भै विच आवहि जावहि पूर । सगलिआ भउ लिखिआ सिरि लेख । नानक निरभउ निरंकार सच एक ।1। म01।

अर्थः- सूर्य भी और चंद्रमा भी रब के हुक्म में हैं, करोड़ों कोस चलते भी हुए रास्ते का अंत नहीं आता । सिद्ध, बुद्ध, देवते और नाथ सारे ही रब के भय में हैं । ये ऊपर तने हुए आकाश जो दिखते हैं, ये भी भय में ही है । बड़े - बड़े बलशाली योद्धे और शूरवीर सब रब के भय में हैं । पुरों के पुर जीव जो जगत में पैदा होते हैं और मरते हैं, सब भय में है । सारे ही जीवों के माथे पर भउ रूप लेख लिखा हुआ है, भाव, प्रभु का नियम ही ऐसा है कि सारे उस के भय में हैं । हे नानक ! केवल एक सच्चा निरंकार ही भय - रहित है ।

नानक निरभउ निरंकार होरि केले राम रवाल । केतीआ कंन्ह कहाणीआ केते बेद बीचार । केते नचहि मंगते गिड़ मुड़ पूरहि ताल । बाजारी बाजार महि आई कढहि बाजार । गावहि राजे राणीआ बोलहि आल पताल । लख टकिआ के मुंढ़ड़े लख टकिआ के हार । जित तनि पाईअहि नानका से तन होवहि छार । गिआन न गलीई ढूढीऐ कथना करड़ा सार । करम मिलै ता पाईऐ होर हिकमति हुकम खुआर ।2। पउड़ी।

अर्थः- हे नानक ! एक निरंकार ही भय - रहित है, अवतारी राम जी जैसे कई और उस निरंकार के सामने तुच्छ हैं उस निरंकार के ज्ञान के मुकाबले में कृष्ण जी की कई कहानियां व वेदों के कई विचार भी तुच्छ हैं

। उस निरंकार का ज्ञान प्राप्त करने के लिए कई मनुष्य भिखारी बन के नाचते हैं और कई तरह के ताल पूरते हैं, रासधारिए भी बाजारों में आकर रास डालते हैं, राजे व राणियों के स्वरूप बना - बना कर गाते हैं और मुंह से कई ढंगों के वचन बोलते हैं, लाखों रुपयों के भाव, कीमती मुंदरे व हार पहनते हैं पर, हे नानक ! वे बिचारे ये नहीं जानते कि ये मुंदरे और हार तो जिस शरीर पर पहने जाते हैं, वह शरीर अंत को राख हो जाने हैं और इस गाने - नाचने से, इन मुन्द्रियों व हारों से ज्ञान कैसे मिल सकता है ?

• नदरि करहि जे आपणी ता नदरी सतिगुर पाइआ । एह जीउ बहुते जनम भरंमिआ ता सतिगुर सबद सुणाइआ । सतिगुर जेवड दाता को नही सभि सुणिअहु लोक सबाइआ । सतिगुर मिलिऐ सच पाइआ जिन्ही विचह आप गवाइआ । जिनि सचो सच बुझाइआ ।4। (1-464-465)

अर्थः- हे प्रभु ! अगर तू जीव पर मेहर की नजर करे, तो उसे तेरी कृपा - दृष्टि से सतिगुर मिल जाता है । ये बेचारा जीव जब बहुते जन्मों में भटक चुका और तेरी मेहर की नजर हुई तो इसे सतिगुर ने अपना शब्द सुनाया । हे सारे लोगो ! ध्यान दे के सुनो, सतिगुरु के बराबर का और कोई दाता नहीं है । जिस मनुष्यों ने अपने अंदर से आपा - भाव गवा दिया है, उनको उस सतिगुर के मिलने से सच्चे प्रभु की प्राप्ति हो गई, जिस सतिगुर ने केवल सच्चे प्रभु की समझ पाई है भाव, जो मनुष्य अपने अंदर से स्वैभाव गवाते हैं, उनको उस सतिगुर के मिलने से सच्चे रब की प्राप्ति हो जाती है, जो सतिगुर सदा स्थिर रहने वाले प्रभु की सूझ देता है ।

(पाठी माँ साहिबा)

ऐक शब्द

उपरोक्त अर्थों में कहे गये गुरू-सतगुरू-शबद-नाम-सच्चा नाम इत्यादि विशेष - विशेषो का केवल और केवल ऐक ही अर्थ विशेष है कि – "रागमई प्रकाशित सुगधित आवाज़ विशेष" । इसके आलावा सारे अर्थ केवल मनमत हैं - गुरूमत का इससे कोई संबंध विशेष नहीं हैं ।

"सबद गुरू - सुरत धुन चेला । गुण गोबिंद - नाम धुन बाणी ।"